सृजन-समीक्षा

अंतरा शब्दशक्ति का प्रकल्प

केन्द्रीय रचनाकार

• वंदना दुबे

सृजक-सृजन-समीक्षा

वंदना दुबे

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
इंदौर,मध्यप्रदेश

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१
शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर,
इंदौर (म.प्र.) ४५२००१
दूरभाष: (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो)९४२४७६५२५९
अणुडाक- antrashabshakti@gmail.com
अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

मूल्य: **४०.०० रुपये**
आवरण: **मृदुल जोशी**
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं| प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत: प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं | प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम ,पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नही |

अन्तरा-शब्दशक्ति में प्रस्तुत

"सृजक"

वंदना दुबे का परिचय

नाम -वंदना दुबे

पति- श्री राजीव दुबे

माता -स्व० श्रीमती मनोरमा शुक्ला

पिता -स्व० श्री लक्ष्मीकांत शुक्ला

जन्म-तिथि - 23 दिसंबर

जन्म-स्थान -जबलपुर

शिक्षा -एम•ए• हिन्दी साहित्य, संगीत (गायन), अर्थशास्त्र, बी•एड•

हायर सेकेंडरी स्कूल में हिन्दी व्याख्याता

संबद्धता -

सदस्य - मध्य प्रदेश लेखक संघ

सदस्य - भोज शोध संस्था धार (मध्य प्रदेश)

सचिव - अखिल भारतीय साहित्य परिषद्,धार

सदस्य - लायंस क्लब

लेखन -काव्य एवं आलेख ।

प्रकाशन - पत्र पत्रिकाओं में यदाकदा रचनाएँ प्रकाशित।

सम्मान - श्रेष्ठ नारी सम्मान(भोज शोध संस्था ,धार (मध्यप्रदेश)

शब्द शक्ति सम्मान (राष्ट्रीय कवि संगम) अन्तरा-शब्द शक्ति सम्मान

आत्मकथ्य

बचपन में पिताजी के मुँह से कवि भूषण पद्माकर आदि के छंद सुनकर कब साहित्य के प्रति लगाव हो गया पता नहीं चला। कहानी की पुस्तकों में अभिरुचि ने कल्पना को पर लगा दिए ।उसका फायदा ये हुआ कि अपने कज़िन्स और सहेलियों को लिखे मजेदार पत्रों ने चर्चित बना दिया।

अब तो पत्र लेखन अतीत के पन्नों में चला गया।
अफसोस; पिताजी अंत समय तक पत्र भेजने को कहते रहे पर उन्हें पत्र न लिख पाई ।
ये मोबाइल युग का सबसे बड़ा दोष है ।
घर में शुद्ध भाषा और वर्तनी सुनते रहने से उनके लिए अलग से प्रयास नहीं करने पड़े ।
पहली कविता 1994 में अपनी सहेली के लिए लिखी। फिर इक्का दुक्का रचनाएँ लिखी।
धार में मध्य प्रदेश लेखक संघ की गोष्ठियों ने
साहित्य लेखन में रुझान बढ़ाने में मदद की ।
अंतरा समूह से जुड़ कर बहुत कुछ सीखने का अवसर मिला । उत्कृष्ट रचनाकारों के सान्निध्य ने लिखने का साहस दिया ।
प्रकृति जहाँ अपनी मधुर रागिनी से मन को गुनगुनाने हेतु बाध्य करती है; वहीं सामाजिक विद्रूपताएँ अपने कर्कश स्वर सुना कर मन को उद्वेलित कर देतीं हैं ।
नारी का कमजोर और विवश रूप मुझे कभी सहन नहीं हुआ। शायद मैंने उसे जिया ही नहीं। जो भी हो मुझे सशक्त नारी ने अधिक प्रभावित किया।
उपलब्धियाँ साझा करने लायक मेरे पास विशेष कुछ नहीं। अपनी दो- चार रचनाओं पर आप विद्वत् जनों की तीक्ष्ण समीक्षा- दृष्टि चाहती हूँ ताकि परिष्कृत होकर भविष्य में ऐसा कुछ लिख सकूँ; जो स्वयं मुझे तो संतुष्ट करे वही पाठक के मन तक पहुँच सके ।

वंदना दुबे

"सृजक का सृजन"

यादें

मन आँगन के इर्द-गिर्द
जाने क्यों मँडराती यादें ।
आतुरता से मन के पट को ,
धीरे से सरकाती यादें ।

निचले ओंठ की कोर दबा कर ,
शर्मा कर छुप जाती यादें।
कुछ उद्दंड हठीली-सी
मन को आँख दिखाती यादें।

चंचल-चंचल शोख चुलबुली,
ताक-झाँक कर जाती यादें।
कभी चीखती जोर-जोर से,
अंतस् तक घुस जाती यादें।

दृढ प्रतिज्ञ मन-से ,भय खाकर ,
दुम दबा कर जाती यादें ।
सोम-सुधा-कलश छलकाती,
मादक रस टपकाती यादें।

कभी वेदना में लिपटी-सी ,
अश्रु प्लावन लाती यादें ।
लहरा कर काँटों का आँचल,
घाव कई दे जाती यादें ।

स्वर्णिम-पंख पसार कभी तो ,
स्वर्गिक सैर कराती यादें ।
कटु-पर्णाक अंजुरी भर-भर ,
कड़वा घूँट पिलाती यादें।

दृढ-प्रतिज्ञ और कर्मठ मन से ,
दूरी सदा बनाती यादें ।
बहते जल-सी जगह बना कर ,
मन को तर कर जाती यादें ।

बाज नहीं क्यों आती यादें?
दूर नहीं क्यों जाती यादें ।

भटकी तरुणाई

तुम भी मौन ,हम भी मौन
दर्शक मूक बने बैठे सब उत्तरदायी होगा कौन ??

तरुणाई भटकी जाती है
नहीं कहीं दिशा पाती है
पश्चिम की अंधी भक्ति में
मर्यादा बिखरी जाती है ।
तृस्त, मात-पिता हैं मौन
आदर्शों का पोषक कौन ??

पालक धन-वृष्टि करते हैं
अत्याकाँक्षा से भरते हैं
दोष दूसरों पर मढते हैं
जिम्मेदारी से डरते हैं
आदर्शों पर धूल जमी है
संस्कारों का वाहक कौन???

शिक्षा का व्यापार सजा है
धनिकों का तो खूब मजा है
उच्च अंको के क्रेता बन कर
मेधावी का तमगा धर कर
आसमान में वे चढते हैं
पाँव ज़मी पर कब धरते हैं
पालक मौन ,शिक्षक मौन
बतलाओ फिर दोषी कौन ??

संचार माध्यमों की मनमानी
चरित्र हनन करने की ठानी
थाली में परोसी जाती
दिशाहीन नित नई कहानी
शासन मौन , प्रशासन मौन
दिशा उन्हें बतलाए कौन ??

नेताओं में छिड़ी लड़ाई
फिर ,बलिदान हुई तरुणाई
राजनीति के दाँव-पेंच में
मोहरा बन गई आज खेद ये
एक भेड़ के पीछे-पीछे
सब भेड़ों ने जान गँवाई
नेता मौन , प्रणेता मौन
देश,समाज सुधारक कौन ??

गर्म ख़ून का केवल दोष
अति ऊर्जा और आक्रोश
मान-सम्मान ताक धरते हैं
नहीं किसी से ये डरते हैं
आतंक-ही-आतंक है छाया
घर में ही आतंकी साया
ऊर्जा को दिशा दिखलाकर
जलता देश बचाए कौन??

कविता कहाँ अवस्थित है?

महाराणा के शूल में कविता
मातृभूमि की धूल में कविता

ममता के भीगे आँचल में
बालेपन की भूल में कविता

साँझ ढले नीड़ों सोते
पंछी के सुकून में कविता

पनघट की वो हँसी ठिठोली
कलश कटि की झूल में कविता

नव किसलय के कोमल तन पर
चुभते हुए बबूल में कविता

कदम डाल पर वेणु की धुन
कालिंदी के कूल में कविता

नटखट कान्हा की चोरी में
गोपी के दुकूल में कविता

मीत-प्रीत की आस लिये हर
मन में खिलते फूल में कविता

हरित पर्ण और लोनी लतिका
कुंजों के हर फूल में कविता

शिव के ताँडव नर्तन में
त्रिनेत्र और त्रिशूल में कविता

आत्मा की एकमेव उपज ये
सूक्ष्म और स्थूल में कविता

हर रस के,हर अलंकार के
हरएक भाव के मूल में कविता ||

कुछ मुक्तक

पन्ने- दर- पन्ने किताब है ज़िन्दगी
ठहरे हुए जल में सैलाब है ज़िन्दगी
खूबसूरती भी यही तो है इसकी
काँटों में खिला गुलाब है ज़िन्दगी।1।

मेरी खामोशी पर तुझे रश्क आता तो होगा
उदासी पर मेरी तू आँसू बहाता तो होगा
फुसला ले खुद को चाहे जितना
मेरे हिस्से के फ़र्ज़ तू निभाता तो होगा।2।

चहकती शाखों पर छाया वीराना है
पंछियों का अब जाने कहाँ ठिकाना है
चंद वादों के तीर तूणीर में लिये
ढूंढता शिकारी जाल कहाँ बिछाना है।3।

रात भर यूँ तैश दिखाता रहा चाँद
बादलों में खुद को छिपाता रहा चाँद
ठान रखी थी ज़िद न हारने की हमने
जाते-जाते मुड़कर मुस्कुराता रहा चाँद।4।

ये चाँद , ये रात , ये तारे ; तुम्हें मुबारक
ये हिंसा ,ये मज़हब,ये बँटवारे, तुम्हें मुबारक
यहाँ तो दो जून की रोटी ही काफ़ी हैं
ये शोहरत ,ये बंगले , ये कारें तुम्हें मुबारक।5।

मन में उठते ख़याल ज़िन्दगी
अंधेरों में है मशाल ज़िन्दगी
हासिल कर रिश्तों की पूंजी
रह न जाए मलाल ज़िन्दगी।6।

जीवनमें कोईआस नहीं है उनको क्या दीवाली
जिंदा हैं पर लाश नहीं हैं उनको क्या दीवाली
क्या जानें वो मुहूरत पूजा दीपक आतिशबाजी
चूल्हों में जहाँ आग नहीं है उनको क्या दीवाली।7।

माँ

माँ बहुत याद आती है
मेरी कोई कोशिश ,
अब उसे पास नहीं लाती है ।
माँ थी, तो प्यार था ,
घर में इंतज़ार था ।
तुलसी की परिक्रमा थी
पौधों में हरीतिमा थी ।
रसोई में महक थी
सकोरों पर पंछियों की चहक थी।
माँ थी तो डाँट थी
निराशा में भी आस थी ।
इच्छाओं पर नियंत्रण था
समय का नियोजन था ।
उसे , बच्चों की चिंता थी
इसलिए बच्चों में निश्चिंतता थी।
माँ थी आदेश थे
नियमों पर उपदेश थे ।
अनुशासन पर जोर था
पर घर में मीठा शोर था ।
माँ थी, तो ज़िद थी
वो सबकी पसंद से परिचित थी ।
समता का व्यवहार था
हर रोज़ रविवार था ।
गर्मियों में, छनती ठंडाई थी
जाड़े में, रातभर तन पर रज़ाई
थी ।
अब ,
न डाँट है , न प्यार है ।
ज़िद है , न इंतज़ार है ।
कभी रसोई में ,
तो कभी , देवघर में
आँखें ढूँढती हैं उसे ।
दूर चली गई है वह ,
तस्वीर हो गई है ।
आज समझ पाई हूँ -
माँ ,
माँ होती है ।
हाथ नहीं पहुँचता मेरा ,
उसकी ऊँचाईयों तक ।

भोर

रवि के भय से दुबकी बैठी
सूर्य ढले पर बाहर आई ।

लाई साँझ संगीत -संदेशा
निशा सितार उठा ले आई ।

छेड़ी शशि ने मधुर तान
ज्योत्स्नाने मीठी ठुमरी गाई ।

अपनी ढपली अपना राग
तारक दल ने धूम मचाई ।

राग-रागिनी छिड़ी मनोहर
सुर की महफ़िल जोश में आई ।

प्रहरी सजग हुआ ध्रुवतारा
भोर भए की भेरी बजाई ।

सभा सुरों की भंग हुई अब
निशा ने सबकी बिदा कराई ।

घूँघट में हँस , प्रथम किरण ने
सुरीली -सी प्रभाती गाई ।

चहके पंछी फिर जगति पर
नूतन जीवन राग सुहाई ।

ग्रीष्म

ग्रीष्मकाल की दस्तक से
झुलस गया मधुमास
जलती धरती व्याकुल पंछी
लिये तृषा की आस

पोखर नदियाँ सूख गए सब
बरस रही अंगार
तपी रोहिणी , जेठ झुलसता
धरती पड़ी दरार

हुआ दिवस लहूलुहान
संध्या भी कुम्हलाई
रजनी झुलसी , लपटें लेकर
चली ऊष्ण पुरवाई ।

ढूंढ रहे मानव पंछी सब
हरित पर्ण की छाँव
हाहाकार मचा धरती पर
झुलस गए सब गाँव

प्यासे कंठ , तृषित दृष्टि
ऊर्ध्व गगन की ओर
कब आएंगे श्याम मेघ
इस धरती की ओर ।

सृजन की समीक्षा

1.

आज की उत्सव मूर्ति वंदना दुबे जी को हम नित्य पढ़ा करते हैं। केंद्रीय रचनाकार के रूप में अनेक रंग पढ़ने को मिले।

साहित्य आपके डी एन ए में है । जैसा की आत्मकथ्य में आपने लिखा और फिर वही जीवन यापन का साधन भी बना।

आप की सभी रचनाएं बहुत शानदार ,सुंदर शब्द विन्यास एवं शैली।

यादें,

भटकी तरुणाईको राह दिखाती,

कविता कहाँ कहाँ है सुन्दर खोज,

मुक्तक भी बढ़िया है

मां ने स्वर्गीय ओम व्यास जी की याद दिला दी।

बहुत शानदार आपको अनेक अनेक शुभकामनाएं,...

कीर्ति वर्मा

2.

उत्सवमूर्ति वंदना दुबे जी का **अभिनंदन**...

प्रभावी आत्मकथ्य, सशक्त शब्द चयन और उम्दा लेखन यही पहचान बेहतरीन है|

आपकी रचनाओं में यादें भी है जो चंचल शोख चुलबुली सी, तो भटकी तरुणाई के लिए संदेश भी, फिर बेहतरीन मुक्तक भी समाहित हैं,वही माँ के प्रति श्रृद्धा भाव भी तो भोर विषयक सृजन भी और ग्रीष्म पर भी बेहतर रचना शामिल है|

यही **विविधता आपके बेहतरीन रचनाकार होने का परिचय है|**

उन्नति के पथ पर अग्रसर हो, यही कामना हैं।

डॉ अर्पण जैन 'अविचल'

हिन्दीग्राम

3.

वन्दना जी को आज उत्सव मूर्ति के रूप में पाकर अच्छा लगा । गाहे ब गाहे पढ़ना और सातत्य में पढ़ना , दो अलग चीजें हैं ।

सातत्य सृजनमन के नये आयाम खोलता है।

सरल मग़र सुगठित भाषा सहज खींचती है ।

विन्यास और शब्द चयन कहीं कहीं छोड़कर,

प्रभावी हैं ।

बचपन से साहित्यिक रुझान हमारी भाषा को समृद्ध तो करता ही है,

भाव भूमि भी परिपक्व करता है ।

शरमा/त्रस्त/

जिन्दा हैं पर लाश नही हैं

अटपटा सा बिम्ब है ।

लाश सरीखे जिन्दा हैं जो ,

सही सिंटेक्स कुछ इस तरह से होगा ।

और आस लाश आग सही काफ़िया नही हैं ।

नारी का कमजोर और विवश रूप किसी को भी स्वीकार न होगा ।एक सार्वत्रिक सत्य है।

यादें :-एक हवा सा सृजन है ।

जैसे हर जगह अबाध प्रवेश, खूबसूरती से संजोये भाव,

भटकी तरुणाई :-आज के परिवेश का आईना है ।

जहाँ मुखर होना है,

जिसे मुखर होना है वहाँ सिर्फ मौन ही मौन पसरा है ।

शाइस्ता तंज़

कविता कहाँ नही हैं :-

वन्दना जी हर भाव हर स्थिति परिस्थिति में,

कविता तलाश कर लेती हैं ।

शिव के नर्तन और तांडव में कविता ढूँढ लेना,
एक सृजन मन की ये बड़ी उपलब्धि है ।
मुक्तक :-भी खूबसूरत बन पड़े हैं ।
कुछ कसावट और अपेक्षित है ।
माँ :-पर कुछ भी लिखो,
शब्द सदैव कम होते हैं ।
माँ ,माँ है इससे इतर कुछ नही ।
भोर :-का खूबसूरती से आगमन और स्वागत सत्कार,
सभा सुरों की भंग हुई वाह क्या बात है ।

ग्रीष्म :-खूबसूरत वर्णन है । सर्दी में अकस्मात् तापमान बढ़ गया जैसे कल्पना कर ,
मैनें पहले भी इंगित किया था तृषा ,
प्यास का भाव है ।
जबकि होना तृप्ति का चाहिए ।
और श्याम मेघ तो पानी नही लाते,
घाघ महाराज की बात करूँ तो वो सिर्फ डराते ही हैं
खूबसूरत रचनाएँ
सतत प्रगति की मंगल कामनाएँ ।

जय हो,
विजय हो

ब्रजेश शर्मा विफल
झाँसी

4.
अंतरा परिवार की सदस्य और केंद्रीय रचनाकार के रूप में वंदना दुबे जी की रचनाओं को पढ़ने का सुखद अवसर!
सहज-सरल और सीधा-सादा आत्मकथ्य प्रभावित करता है। **पिता से मिला**

साहित्यिक प्रेम अभिरुचि बन कर लेखन के रूप में विकसित होना आपकी सबसे बड़ी उपलब्धि है। अब यह आप पर है कि अपनी सक्रियता से इसे निरंतर धार देते जाइए।

मोबाइल युग की यह सबसे बड़ी क्षति है कि इसने हाथ से पत्र लिखने के चलन को समाप्त कर दिया। जो आत्मीयता उन पत्रों में हुआ करती थी, वह मोबाइल के संदेशों में कहाँ? हम रचनाकारों का यह दायित्व तो बनता है कि हम हाथ से लिखे पत्रों के चलन को पुनर्जीवित करने का प्रयास करें।

यादें आती हैं तो अच्छा लगता है, बार-बार आ कर सताती है तो भी मुश्किल... इस भाव को बहुत सुंदरता से व्यक्त किया है।

भटकी तरुणाई.... आज की सबसे बड़ी समस्या... सब उसकी ओर से मौन, अपने में लीन। उतरदायित्व लेने को कोई तैयार नहीं।

कविता हर जगह है... बस देखने की दृष्टि चाहिए... के भाव की सुंदर अभिव्यक्ति है कविता कहाँ अवस्थित है.... में।

माँ के होते हुए सब कितना सुंदर, अनुशासित और प्रेममय होता है यह अच्छी तरह तब पता चलता है जब वे तस्वीर बन जाती हैं।

भावों की अभिव्यक्ति बहुत अच्छे ढंग से रचनाओं में परिलक्षित होती है। लेखन की निरंतरता और अध्ययन की गहराई से कसावट भी आती जाएगी।

उज्जवल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ।

डा० भारती वर्मा बौड़ाई

अन्तरा-शब्दशक्ति के व्हाट्सअप एवं फेसबुक समूह में १३ नवम्बर २०१६ दिन रविवार से हर रविवार को 'सृजक-सृजन-समीक्षा विशेषांक' आरम्भ किया गया जिसमें 'सृजक' का परिचय, 'सृजक का सृजन' और पाठकों की भूमिका में समूह के अन्य सभी सदस्यों द्वारा की गई 'सृजन की समीक्षा' को अन्तरा-शब्दशक्ति के फेसबुक पेज और समूह पर सहेजा गया है। अब तक वरिष्ठ और नवोदित रचनाकारों सहित लगभग ६५ रचनाकारों को प्रस्तुत किया जा चुका है और आगे भी गतिविधि सतत क्रियान्वित है।

'सृजन-समीक्षा' एक प्रयास है 'सृजक के सृजन को समीक्षा सहित' पाठकों तक वेबसाइट पर ईबुक और मुद्रित पुस्तकों के माध्यम में महत्वपूर्ण दस्तावेज की तरह सहेजने का। आशा है यह महत्वपूर्ण दस्तावेज सृजक और साहित्य जगत दोनों के लिए अनमोल धरोहर बनेगा। अनंत शुभकामनाओं सहित।

डॉ. प्रीति सुराना

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी–सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

सहयोगी संस्थान

हिन्दीग्राम भाषा समन्वयक
www.hindigram.com

मातृभाषा उन्नयन संस्थान (पंजी.)
हिंदी भाषा के विकास हेतु प्रतिबद्ध
www.matrubhashaa.org

मातृभाषा वैचारिक महाकुम्भ
www.matrubhashaa.com

अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन

१५ नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१

संपर्क: ९४२४७६५२५९ । अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

अन्तरा शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com